SHODH SAMAGAM

ISSN : 2581-6918 (Online), 2582-1792 (PRINT)

मैत्रेयी पुष्पा की आत्मकथाओं में स्त्री जीवन संघर्ष

कुमारी अपर्णा, शोधार्थी,
मगध विश्वविद्यालय, बोधगया, बिहार, भारत

ORIGINAL ARTICLE

Corresponding Author
कुमारी अपर्णा, शोधार्थी,
मगध विश्वविद्यालय, बोधगया, बिहार, भारत

shodhsamagam1@gmail.com

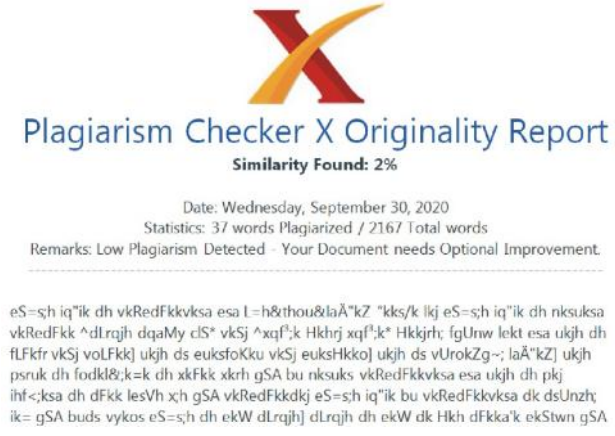

Received on : 29/09/2020
Revised on : -----
Accepted on : 07/10/2020
Plagiarism : 02% on 30/09/2020

शोध सार

मैत्रेयी पुष्पा की दोनों आत्मकथा 'कस्तुरी कुंडल बसै' और 'गुड़िया भीतर गुड़िया' भारतीय हिन्दू समाज में नारी की स्थिति और अवस्था, नारी के मनोविज्ञान और मनोभाव, नारी के अन्तर्वाह्य संघर्ष, नारी चेतना की विकास–यात्रा की गाथा गाती है। इन दोनो आत्मकथाओं में नारी की चार पीढियों की कथा समेटी गयी है। आत्मकथाकार मैत्रेयी पुष्पा इन आत्मकथाओं का केन्द्रीय पात्र है। इनके अलावा मैत्रेयी की माँ कस्तुरी, कस्तुरी की माँ का भी कथांश मौजूद है। इसके अलावा मैत्रेयी की बेटी। नारी की इन चार पीढियों का कार्यकाल पाँच दशक में फैला है। इसलिए गुलाम भारत से आजाद भारत के पाँच दशक की विकास यात्रा को इन आत्मकथाओं के माध्यम से जाना जा सकता है।

मुख्य शब्द

नारी, मनोविज्ञान, चेतना, संघर्ष, विकास।

मानवीय संबंधों के बनते–बिगडते हालात

मैत्रेयी पुष्पा की आत्मकथाओं में तरह–तरह के मानवीय संबंधों का चित्र उभरता है। इस मानवीय संबंधों में माँ और बेटी का संबंध, भाई और बहन का संबंध, सहपाठी और पडोसी का संबंध, पदाधिकारी और जनता का संबंध, पति और पत्नी का संबंध, गुरु और शिष्य का संबंध आदि। इन्हीं संबंधों से पारिवारिक और सामाजिक संबंध बनते हैं। इसलिए शोधार्थी ने मैत्रेयी की आत्मकथाओं में व्यक्त इन मानवीय संबंधों के स्वरुप की पड़ताल करने का निर्णय लिया है। ये संबंध सामाजिक संबंध हैं, तो इसका भावात्मक और नैतिक मूल्य भी है। ये संबंध प्रेम के संबंध हैं, तो यहाँ घृणा का संबंध भी दिख जाता है। आत्मकथाओं में अपेक्षाओं और उलाहनाओं से भरा संबंध भी है। इन संबंधों में जटिलता है तो इसमें सरलता भी झलकती है। इन संबंधों में राग झलकता है

तो द्वेष भी दिखायी देता है। यदि कहीं प्रेम दिख जाता है तो रंजिश भी दिखता है। इन आत्मकथाओं में समस्त मानवीय और अमानवीय भावों का दर्शन होता है। ये मानवीय भाव विभिन्न पात्रों के आपसी संबंधों की उपज है। इन भावों की अभिव्यक्ति पात्रों के व्यवहार, कार्यकलाप और संवाद के माध्यम से होती है।

समस्त मानवीय संबंध, जिसे प्रकारान्तर से सांसारिक संबंध कहते हैं, अपने स्वरुप और संरचना में जटिल है। इसकी जटिलता का परिणाम और प्रभाव ही है कि जीवन इतना तनावपूर्ण और त्रासद हो गया है। ये संबंध जटिल इस अर्थ में है कि लोग इसे सुलझा नहीं पा रहे हैं और सर्वत्र तनावपूर्ण माहौल बना है। चाहे वह संबंध भाई–बहन का हो या पति–पत्नी का, चाहे वह संबंध माँ–बेटी का हो या कर्मक्षेत्र के किसी सहयोगी का, सभी जगह तनाव है, संतुलन की कमी है और एक अराजकता। ये संबंध अपने स्वरुप और संरचना में सरल नहीं है, क्योंकि इसकी उलझनें इंसान को अंतिम समय तक परेशान किये रहती है। इन संबंधों के जटिल और वैमश्यतापूर्ण होने का कारण व्यक्ति का अहंकार, अपेक्षा और स्वार्थ है। लोग अपने संबंध बनाते हैं अपने अहंकार की संतुष्टि के लिए, स्वार्थ की पूर्ति के लिए और अपेक्षा को पूर्ण करने के लिए। संबंध चाहे कोई भी हो व्यक्ति सर्वप्रथम स्वयं को देखता है और फिर पर पर नजर जाती है। मनुष्य का व्यवहार मूलतः स्व केन्द्रित होता है। सभी अपने हित के लिए दूसरों से संबंध बनाता है। लेकिन आदर्शवादी भारतीय समाज में स्वार्थ की जगह त्याग, स्वयं की जगह पर, आत्म की जगह अन्य को अहमियत देता रहा है।

संबंध में सुन्दरता होती है तो कुरुपता भी होती है। संबंध में कुटिलता होती है तो उसमें करुणा भी होती है। संबंध मालिक और नौकर का होता है तो संबंध सखा का भी होता है। संबंध में विश्वास होता है तो विश्वासघात भी संबंध में होता है। संबंध दो व्यक्ति की आपसी समझ का परिणाम है। संबंध दायित्व और अधिकार को जन्म देता है। संबंध एक जबाबदेही हैं। संबंध आपकी व्यवहार कुशलता का परिणाम है। संबंध बनावटी हो सकते है तो संबंध आत्मिक भी हो सकते हैं। संबंध के बंध आपके विवेक और व्यवहारकुशलता की परीक्षा लेता है। संबंध व्यक्ति के सोच, उसकी दृष्टि और स्वभाव से प्रभावित होता है। क्रोध और करुणा, प्रेम और घृणा, शोषण और शासन संबंध का कारण भी है और परिणाम भी। नकारात्मक सोच और सृर्जनात्मक सोच संबंधों के स्वरुप का निर्धारण करता हैं।

मैत्रेयी अपनी रचनाओं में मानवीय संबंधों के बनते–बिगडते हालात का चित्रण करती हैं। उनका कहना है कि संबंध तो गाँव की गलियों में बनते हैं। शहरों में तो लोग कमरों और कोठियों में बंद हैं। मैत्रेयी का कहना है –''दिन, महीनों और सालों में बनते–बिगडते और बदलते संबंधों के सूत्रों को पकडने की आदत मुझे एक लत की तरह है, शायद इसीलिए भी गाँव मुझे खींचता रहा। क्योंकि शहर में ऐसा सब मकानों और कोठियों के बन्द किवाडों के भीतर छिपा रहता है।''[1] ग्रामीण समाज में सामूहिकता है तो नगरीय जीवन में वैयक्तिकता अधिक है। इस उद्धरण में मैत्रेयी के लेखकीय व्यक्तित्व की विशेषता भी झलक जाती है। वस्तुतः रचनाकार मानवीय संबंध के बनते–बिगडते स्वरुप का ही चित्रण करता है। मैत्रेयी की रचनाओं में मानवीय संबंधों के बदलते स्वरुप की जानकारी होती है। मैत्रेयी का ग्रामीण समाज और जीवन से जो नोस्टेलजिक अनुराग है, वह गॉव के बदलते व्यवहार के कारण क्षरित हो गया।

'उलट पवन कहॉ राखिए' मैत्रेयी पुष्पा की आत्मकथा 'कस्तूरी कुंडल बसै' का दूसरा अध्याय है, जिसमें लेखिका ने अपने बचपन के प्रभावशाली कथाओं को समेटा है। मैत्रेयी स्वंय को 'उलट पवन' मानती है, जिसे कहाँ रखा जाय, इसी द्वन्द्व में उसकी माँ कस्तूरी है। उल्टी दिशा में चलने वाले पवन को संभालना कठिन काम है। कस्तूरी अपनी इकलौती संतान मैत्रेयी के चाल–चलन और व्यवहार से परेशान है। यह परेशानी वस्तुतः उलटे पवन को साधने जैसा है। बाल मैत्रेयी का स्कूल न जाना और दिन–रात खेरापतिन के आगे–पीछे घुमते रहना कस्तूरी को व्यथित करता है। माँ अपने बच्चों के लिये सबसे अधिक संवेदनशील होती है। कस्तूरी भी एक माँ है। वह अपनी बेटी मैत्रेयी के लिये अधिक संवेदनशील है। उसकी पढाई–लिखाई, चाल–चलन, उसकी विकासशील संवेदना के प्रति अत्यधिक सचेत होती है। इसलिए जब वह मैत्रेयी को अपनी पटरी से उतरते देखती है तो वह काफी घबरा जाती है। यह माँ का कलेजा है कि पुत्री के लिये दहल जाता है।

मैत्रेयी पुष्पा 'कस्तूरी कुंडल बसै' के चौथे अध्याय में कस्तूरी को मैत्रेयी के लिए वर ढूँढते दिखाती है। एक पति के रुप में पुरुष में क्या–क्या गुण होने चाहिये, जो कस्तूरी की बेटी को ब्याह के बाद बेहतर जीवन दे सके। कस्तूरी को लडकों की लफंगई एकदम पसंद नहीं है। हालाकि वह सिनेमा देखने को भी लफंगई से जोडकर देखती हैं। वह बाप का मुँह जोहने वाला और कोल्हू के बैल से अपनी बेटी की शादी करने को तैयार नहीं है।

मैत्रेयी एक माँ है और पत्नी भी। जब एक माँ और पत्नी के बीच द्वन्द्व खडा होता है तो काफी खिचाव महसूस होता है। सुजाता की अन्तर्जातीय प्रेम विवाह को लेकर मैत्रेयी द्वन्द्व में फस गयी। एक तरफ उसे अपनी बेटी का प्यार खींच रहा है तो दूसरी तरफ पति की इज्जत का सवाल है। वे 'नवयुवाओं को बुजुर्गों के रुतवे तले रौंद' देने वाले सामाजिक जिद' के विरुद्ध आवाज उठाती हैं। तभी तो वे यह निर्णय ले पाती है कि 'विवाह होगा, जिसे आना है आए, नहीं आना है नहीं आए।' मैत्रेयी ने चुनौती भरा यह निर्णय लिया और नवयुवाओं की आकांक्षा को सामाजिक नियमों से मुक्त होने की सहुलियत प्राप्त हो सकी। सुजाता और नवल की शादी हुई। इस शादी में सुजाता के पिता डॉ. शर्मा भी बडे आत्मविश्वास के साथ शामिल हुए। अक्सर देखा यह जाता है कि लडकी के पिता 'सामाजिक अवसरों पर इज्जत के इजाफे के प्रलोभन में अपनी शक्ति खोकर कमजोर हो जाता है। लेकिन सुजाता की शादी के प्रसंग में डॉ. शर्मा ने समस्त सामाजिक हदबन्दियों को तोडते हुए स्वतंत्र फैसलों की ओर हाथ बढाया। मैत्रेयी लिखती है –''आत्मशोधन करना है तो आदमी को बेटी का पिता होना चाहिये। क्योंकि जब उसे रुढियों, कर्मकांडों और शास्त्रीय नियमों में उलझाकर बार–बार नीचा दिखाया जाता है, बस यही से वह अपनी बाध्यता तोडकर स्वतंत्र फैसलों की ओर बढता है।''[2]

'धिय सबै कुल खोयो' अध्याय में लेखिका ने स्त्रीत्व की सामाजिक अस्वीकृति को दूसरा सवाल बनाया है। मैत्रेयी लिखती हैं –''मेरी यह रचना इतनी दुर्भाग्यपूर्ण – या यह मेरी ही नियति कि मेरा स्त्रीत्व लडकी की माँ होने के कारण अस्वीकृत किया जाय ?''[3] भारतीय समाज में जब एक पत्नी, बहु और बेटी अपनी दो बेटियों के होते हुए बेटा की चाह में तीसरा बच्चा भी बेटी के रुप में जनती है, तो उस माँ पर क्या गुजरती है, इसे मैत्रेयी ने इस अध्याय में बयान किया है। मैत्रेयी ने 'तीन लडकियाँ और उनकी हतभागी माँ पर तरस खाने वाले समाज पर प्रहार किया है। माँ को नीचा दिखाने के लिए बेटियों को कोसा जाता है। स्त्रियों के प्रति निर्दयी समाज के रुख का विरोध करते हुए मैत्रेयी लिखती हैं –''औरतें बेटी–बेटे के मामले को प्रेस्टेज इश्यू बनाए रहती है।''[4]

गाँव की पंचायत भी मैत्रेयी की आत्मकथा में अपने नग्न रुप में सामने आयी है। पंच परमेश्वर के फैसले मैत्रेयी की माँ कस्तूरी के सामने आ खडा हुआ। गाँव के ब्राह्मण सभा ने कस्तूरी के लिए फैसला सुनाया – ''कस्तूरी की लडकी ने लडकियों के सिवा क्या पैदा किया ? अनमोल दामाद का वंश नाश कर दिया।''[5] कस्तूरी की वंश बेली स्त्रियों से लदी है। कस्तूरी की एक बेटी मैत्रेयी, मैत्रेयी की तीन बेटियाँ नम्रता, सुजाता, ममता और उसकी भी एक बेटी वासदत्ता।

यह स्त्रियों की वंश बेली

कस्तूरी और मैत्रेयी का संबंध माँ–बेटी का संबंध है। माँ–बेटी का पवित्र रिश्ता भी विश्लेषण की मांग करता है। दोनों के संस्कार, सोच, और अवधारणा का सातत्य, उसके अन्तर्संबंध और अन्तर्संघर्ष की तलाश आवश्यक है। मैत्रेयी अपनी माँ कस्तूरी के लिए सामानयतः प्रतिवादी रुख रखती हैं। लेकिन उसके व्यक्तित्व के उज्ज्वल और स्याह पक्षों को रखती रही हैं। वे लिखती हैं –''मेरी माँ ने कभी पति का, पुत्र का, भाई या पिता का दिया सुख नहीं भोगा। जो कुछ अर्जित किया, खुद किया।''[6] इस अध्याय में कस्तूरी की मृत्यु हो जाती है। एक पीढ़ी की कथा का अंत हो जाता है। माँ और बेटी की कथा का अंत होता है।

बेटा न जनने वाली स्त्री को निपुती और कुलनाशिनी की उपाधि दी जाती है। यही उपहार मैत्रेयी को भी मिला। मैत्रेयी ने स्पष्ट लब्जों में कहा है कि सभ्य और आधुनिक समाज में भी 'एक बेटा जरुर हो' का रिवाज है। परिवार–नियोजन भी तभी रुचिकर होता है, जब कम से कम एक बेटा हो गया हो। लेखिका लिखती हैं –''एक बेटा जरुर हो, का रिवाज परिवार नियोजन की रीढ़ दबाये रहता है।''[7] अभी भी भारतीय समाज में बेटा की चाहत

यथावत बनी हुई है, जबकि मादा भ्रूण हत्या से लेकर तमाम तरह के सामाजिक अत्याचार के कारण स्त्रियों का लिंग अनुपात पुरुषों की तुलना में काफी कम हो गया है। स्त्रियों का घटता हुआ लिंग अनुपात जहाँ सामाजिक चिंता का विषय है, वही बेटी का जन्म मातम का कारण बन जाता है। आखिर बेटों के प्रति समाज–परिवार की ऐसी चाहत का कारण क्या है ? मैत्रेयी लिखती हैं –''भारतीय गृहस्थों का संस्कार जन्म से लेकर मृत्यु तक पुत्र और पिंडदान से बँधा है।''[8] यही वह कारण है कि भारतीय समाज में मात्र बेटी के माता–पिता होने के कारण 'अपने विकास वैभव के बाद भी वे 'निस्संतान माता–पिता की तरह देखे जाते हैं।''[9] पुत्र के प्रति परिवार की यह पुकार इतनी बलवती है कि आधुनिकता के तमाम वादों और दावों के बावजूद पुत्रमोह में भारतीय परिवार पडा हुआ है।

बेटी का जन्म माँ के गर्भ को व्यर्थ घोषित कर देता है। मैत्रेयी अपनी तीनों बेटी को जन्म देने के बाद ऐसा महसूस करती हैं। समाज ने तो मैत्रेयी की पहली बेटी के जन्म के बाद ही कह दिया –''तवा बजाओ। असगुन का संदेश।'' लेखिका लिखती हैं कि बेटी के जन्म से 'माँ का गर्भ व्यर्थ। उसका प्रसव बेपीर।''[10] बेटा के जन्म में थाली बजती है और बेटी के जन्म में तवा। इस प्रचलित लोक मान्यता को मैत्रेयी 'मानवीय ढंग की वहशी शैली।' कहा है। प्रसव को लेकर उत्सव और शोक का माहौल माँ पर कैसा मनोवैज्ञानिक असर डालता होगा, इसका सहज अनुमान लगाया जा सकता है।

मैत्रेयी एक माँ के रुप में तीसरे बच्चे को जन्म देती है और वह भी एक लडकी के रुप में, तो स्वभाविक है कि भारत का दकियानुसी समाज, जिसका अधिकांश हिस्सा गाँव–देहात में रहता है, इस निपुती की निरवंसिया इतिहास को उकटकर रख दिया होता। लेकिन गनीमत है कि मैत्रेयी अपनी तीसरी बेटी को दिल्ली के एम्स केम्पस में जन्म देती है, जिसे आधुनिक और सभ्य समाज कहा जा सकता है। मैत्रेयी ने छठे अध्याय में मातृत्व को स्त्रीत्व की पूर्णता मान लेने की धारणा को भी उठाया है। लेखिका ने प्रश्नात्मक लहजे में लिखा है –''क्या मेरी प्रकृति माँ बनकर गौरवान्वित होने की रही है ? क्या मैंने विवाह के समय बच्चों के बारे में सोचा था ?''[11]

निष्कर्ष

तीन बेटियों की माँ मैत्रेयी जब अपने गाँव गयी तो वह सदमें में आ गयी। स्तब्ध हो गयी। यह गाँव की निर्मम हरकत का परिणाम थी। मैत्रेयी पुत्रहीनता के दर्द के साथ–साथ तीन–तीन बेटियों की माँ होने का दंश झेलने पर मजबूर हुई। मैत्रेयी की माँ कस्तूरी बेटियों के प्रति गाँव की दृष्टि का दंश महसूस करती है। निपुती कहलाने की पीडा के संग उसके गाँव समाज के लोंगों का डॉ. रमेशचन्द्र शर्मा का दूसरा विवाह रचाने पर जोर दे रहे थे। मैत्रेयी के सामने एक सौतन को बिठाने की तैयारी उसके गाँव वालों ने ही की।

संदर्भ सूची

1. *'कस्तुरी कुंडल बसै'* –प्रकाशकः राजकमल प्रकाशन प्रा0 लि0, (2009) (1) पृ0 100
2. *गुडिया भीतर गुडिया* –प्रकाशक : राजकमल प्रकाशन प्रा0 लि0, (2008) (2) पृ0 259 (3) पृ0 92 (4) पृ0 121 (5) पृ0 100 (6) पृ0 123 (7) पृ0 95 (8) पृ0 95 (9) पृ0 95 (10) पृ0 96 (11) पृ0 96
3. www.pteducation.com/Sample/Modern_moral_theories_H.pdf
4. https://issuu.com/futuresamachar/docs/april2012-opt
5. https://www.scribd.com/document/368652693/Bapu-aur-Stree-pdf
6. http://www.nios.ac.in/media/documents/316courseE/Hg-27F.pdf
7. http://upgovernor.gov.in/site/writereaddata/UploadedPressRelease/pdf/C_201911272319290408.pdf

****